© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 11 | October – December 2017

लक्ष्मीकान्त वर्मा : सम्पादकीय एवं पत्र साहित्य में अभिव्यक्त कथात्मक चिन्तनधारा एवं दर्शन का समीक्षात्मक अध्ययन

योगिता रानी, yogitakharb40@gmail.com

सारांश

लक्ष्मीकान्त वर्मा के साहित्य में लेखकीय यथार्थ प्रकट हुआ है। इनकी प्रत्येक साहित्यिक विधा यह संकेत देती है कि रचनाकार के लिए जिन्दगी कहानी से बहुत बड़ी है। वर्मा जी की गद्यविधा, कहानी, नाटक, उपन्यास, पत्र–संवाद, सम्पादकीय और पत्र साहित्य विचारों की भीड़–भाड़ में पड़ाव लेकर अग्रगामी हुआ है। इनकी रचनात्मकता ऐसे चरित्रबोध को प्रकट करती है जो अपने विचारों का मूल्य चुकान में विचलित नहीं होते। समीक्षकों ने इन्हें विचारात्मक साहित्य की संक्षा से अभिहित किया है।

ISSN 2454-308X
9 770024 543081

लक्ष्मीकांत वर्मा जी लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, मोती लाल नेहरू, लाल लाजपत राय, रामबिहारी बोस, सुभाष चन्द्र बोस, जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल, हकीम अजमल खाँ, आचार्य नरेन्द्र देव, डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, जमनालाल बजाज, सरोजिनी नायडू, गणेश शंकर विद्यार्थी, पराडकर, सी.वाय. चिन्तामणि, जय प्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया और उस युग की ऐसी अनेक विभूतियों के सान्निध्य में रहें।

लक्ष्मीकान्त वर्मा जी पत्रलेखन के लिए विख्यात थे, उनके पत्रों का ऐतिहासिक महत्व है और साहित्यिक महत्व भी है। अपने समय के संघर्ष और युगबोध को इन पत्रों में सजीव अभिव्यक्ति प्राप्त हुई है। जमाने के युग पुरुषों और सामान्य जनों से उनका समान संपर्क था। इस सम्पर्क की अभिव्यक्ति का अपना महत्व है।

मूल शब्द – लक्ष्मीकान्त वर्मा, सम्पादकीय, पत्र, अभिव्यक्त, चिन्तनधारा, दर्शन।

प्रस्तावना

प्रो. वर्मा ने सम्पादकीय एवं पत्र साहित्य के क्षेत्र में एक तहलका मचा दिया थ। इनकी सृजनात्मक भाषा उनके मानस जगत को स्पष्ट रूप से हमारे सामने रखती है। इस सन्दर्भ में हम उनकी पूर्वी सौन्दर्य चेतना का परिचय भी पा सकते हैं। उनकी सौन्दर्य–चेतना के आरम्भिक बिन्दु छायावादी काव्य रचनाओं में है। जो काव्य कलावादी प्रवृत्ति से प्रभावित है। राष्ट्रीय धारा द्वारा प्रभावित काव्य रचनाओं में वह पुनः प्रयोजनवादी मानवतावादी सौन्दर्य अध्येता जान पड़ते हैं। किन्तु समसामयिक काव्य रचनाओं में हमें उनके नितान्त नये रूप के दर्शन होते हैं। यहाँ उनकी सौन्दर्य चेतना प्रभाववादी न होकर रचनात्मक अधिक है। इसलिए भी उनकी काव्य भाषा का शब्द विधान जीवन सापेक्ष है। काव्य भाषा के आधार पर उनकी सौन्दर्य चेतना निरन्तर गतिशील और सक्षम जान पड़ती है।''

शैक्षणिक सम्पादकीय के अन्तर्गत वर्मा जी के शिक्षा सम्बन्धी विचार हैं। वे स्वयं उच्च शिक्षा से जुड़े हुए थें सम्पादकीय के क्षेत्र में एक शिक्षा शास्त्री के रूप में उन्हें पाना कम दिलचस्प नहीं है। वर्मा जी की सम्पादकीय शैली काफी अभिव्यंजनात्मक है। चित्रमयतापूर्ण अथवा प्रतीक और बिम्ब प्रस्तुत करने वाली भाषा उनकी निर्मित है। 'नये प्रतिमान–पुराने निकष' में यह शैली स्पष्टतः परिलक्षित होती है। इसके मूल में कुछ विद्वान् फारसी शैली का प्रभाव ढूंढते है। उर्दू की मुहावरेदानी, लक्षणिकता, व्यंग्योक्तियाँ और मनोरम सूक्तियों के सटीक प्रयोगों के काण लक्ष्मीकान्त वर्मा जी की भाषा अत्यन्त स्फूर्तिमयी और जीवन्त दिखायी पड़ती है। नये फैशन के प्रति व्यंग्य–आक्रोश व्यक्त करते समय उनकी भाषा बहुत पैनी हो जाती है। देशी शब्दों और कहावतों का प्रयोग तो लक्ष्मीकान्त वर्मा जी की अपनी विशेषता ही है। ये प्रयोग धरती की सौंधी गन्ध से ओत–प्रोत है। और इनके कारण भाषा में एक अद्‌भुत प्राणवत्ता दिखाई पड़ती है।

राष्ट्रीय परम्परा में उनकी टिप्पणी अवलोकनीय है। ''हम भी बड़े आनन्द के साथ आप लोगों की महिमा गाते हैं, पर झोपड़ी में जब हमारी स्त्री हमसे पूछती है कि क्या अब इस नये कानून से हमें भर पेट खाने को मिलेगा ? शिक्षा की आवश्यकता है, हम भी समझते हैं, पर खाली पेट तो शिक्षा नहीं भर सकेगी। शिक्षा के लिए जो समय चाहिए, उस समय हम कठिन परिश्रम से थके हुए रहते हैं।'' 1919–20 की बात है जब महात्मा गाँधी राजनीति व स्वतन्त्रता आन्दोलन में पूर्णरूपेण समर्पित होकर आ गये और उन्होंने देश के क्रान्तिकारी युवकों को राष्ट्रीय जागरण में कूट पड़ने का आह्वान किया। तभी माखनलाल जी, माधवराव सप्रे, द्वारा सम्पादित पत्र ''कर्मवीर'' में सहायता करने लगें। पत्र को तत्कालीन स्थितियों के अनुरूप अपने ओजस्वी एवं देशभक्ति पूर्ण लेखों से सुशोभित कर ख्याति दिलाई।

''प्रभा व और प्रताप'' में लेखन का अनुभव तथा ''कर्मवीर'' के कुशल सम्पादन से पं. माखनलाल चतुर्वेदी का नाम साहित्यिक जगत् के साथ–साथ पत्रकारिता में भी ध्रुव तारें की तरह चमकने लगा। ''कर्मवीर'' के लेखों से ब्रितानी सरकार को उजाड़ फेंकने व जनजागरण पैदा करने में माखनलाल सतत् प्रयासरत रहें। परिणाम स्वरूप विद्रोही साहित्यकार व पत्रकार के रूप में जेल के सीखचो में बन्द भी होते रहे।